अवतार सिंह पाश के शहादत दिवस (23 मार्च) के अवसर पर

पाश

तुम्हारे जिस्म को
छलनी कर
उन्हें भ्रम था
कि तुम्हारे शब्द भी
हो जायेंगे खामोश
लेकिन वे नहीं जानते थे
कि कवि के मरने से
कभी कविता नहीं मरती
कविता तो जीवित रहती है
सांसों से सांसों तक
आदमी से आदमी तक
पीढ़ियों से पीढ़ियों तक
पवन के रथ पर
होकर सवार

तुम्हारे जिस्म को छलनी कर
उन्हें भ्रम था
कि पाश मर गया है

लेकिन पाश तो ज़िन्दा है
हल चलाते किसानों के गीतों में
उगी कपास के फूलों में
गांवों की चौपालों में
अपने शब्दों में
पाश अभी जिन्दा है
अपनी कविताओं में
खेत
अपने बेटों को
कभी मरने नहीं देते

-अमरजीत कौंके

नवारुण भट्टाचार्य की दो कविताएं

बुरा वक्त

बुरा वक्त कभी अकेले नहीं आता
उसके संग-संग आती है पुलिस
उसके बूटों का रंग काला है
बुरा वक्त आने पर
हंसी पोंछ देनी पड़ती है रूमाल से
पंखुड़ियां धूल हो जाती हैं
जुए का बाजार फूलता जाता है मरे हुए जानवर की तरह
प्रेम की गर्दन जकड़ कर
डर झूलता रहता है
अभागे लोग लटकते हैं लैंपपोस्ट से
गले में रस्सी डालकर
उनके साथ में लुकाछिपी खेलते हैं कालाबाजारिये
सड़कों पर किलबिलाते हैं
वी डी, वेश्याओं के दलाल और जेम्स बांड
भीड़ को ढकेल कर सायरन बजाती हुई
पुलिस गाड़ी चली जाती है
उसमें बैठी होती है पुलिस
उनके बूटों का रंग उनके होठों की तरह काला है
उनकी घड़ी में बजता है
बुरा वक्त ।

हे लेखक

कलम को कागज पर फेरते हुए
आप दृष्टि को
बड़ा नहीं कर सकते
क्योंकि कोई नहीं कर सकता।

दृश्य के नीचे जो बारूद और कोयला है
वहां एक चिनगारी
जला सकेंगे आप ?

दृष्टि तभी बड़ी होगी
लहलहाते
फूल फूलेंगे धधकती मिट्टी पर
फटी-जली चीथड़े-चीथड़े जमीन पर
फूल फूलेंगे।

ज्वालामुखी के मुहाने पर
रखी हुई है एक केतली
वहीं निमंत्रण है आज मेरा
चाय के लिए।
हे लेखक, प्रबल पराक्रमी कलमची
आप वहां जायेंगे ?